नातेदारी के प्रकार
(Types of Kinship)

नातेदारी के दो मुख्य प्रकार बतलाये जाते है जो प्रायः सभी समाजो मे प्रचलित है। ये है- विवाह-मूलक नातेदारी और रक्त मूलक नातेदारी।

① विवाह मूलक नातेदारी :—

सामाजिक या कानूनी दृष्टि से मान्य वैवाहिक संबंधो से जो संबंध प्रकट होते है, उसे विवाह-मूलक नातेदारी कहा जाता है। इस रूप में संबंधित संबंधियों को विवाह-मूलक नातेदार कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप — विवाह के बाद एक पुरुष या महिला न केवल पति या पत्नी बनता है, बल्कि अन्य संबंधियों का विकास करता है। एक पुरुष का पति के साथ-साथ दामाद, बहनोई, जीजा, मौसा आदि का बनना। उसी तरह एक महिला पत्नी के साथ-साथ पुत्र-वधु, भाभी, चाची, जेठानी आदि का बनना। प्रत्येक संबंध दो व्यक्ति में है। जैसे - देवर - भाभी, साली - जीजा, सास - दमाद, पति - पत्नी आदि। इस प्रकार विवाह द्वारा उत्पन्न नातेदारी विवाह-मूलक नातेदारी कहलाता है।

② रक्त मूलक नातेदारी :—

रक्त संबंध पर आधारित सम्बन्धता को रक्त मूलक नातेदारी कहा जाता है। इस रूप में संबंधित संबंधियों को रक्त मूलक नातेदारी कहते है। उदाहरणस्वरूप - माता-पिता बच्चों के बीच, या संबंधु दो भाईयों के बीच का संबंध, दो भाई-बहन के बीच का संबंध आदि। इस संदर्भ में यह जानना है कि रक्त मूलक नातेदारी के निर्धारण में सिर्फ जैविकीय तथ्य ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि सामाजिक मान्यता भी महत्वपूर्ण होती है। जैसे - गोद लेने की प्रथा सार्वभौमिक है। दत्तक पुत्र या पुत्री के सभी

जगह इस प्रकार का व्यवहार किया जाता है कि वह मानो जैविक रूप से उत्पन्न सन्तान हो।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि नातेदारी के दो मुख्य प्रकार है:— (1) विवाह मूलक नातेदारी और (2) रक्त मूलक नातेदारी।

नातेदारी में सबसे अहम बात है सम्बन्ध। यह संबंध दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हो सकता है। यह विवाह मूलक नातेदार या रक्त मूलक नातेदार पर आधारित हो सकता है। विवाह मूलक नातेदार में एक युवक और युवती का नातेदार शादी के बाद नए परिवार से शुरू होता है। जैसे कि युवक शादी के बाद पति, दामाद, जीजा, मौसा इत्यादि संबंधो अर्थात नातेदारी से बँधता है।

इस प्रकार, रक्त मूलक नातेदार एक व्यक्ति को उसके जन्म से ही नातेदारी प्राप्त हो जाती है। जैसे कि एक व्यक्ति जिस परिवार में जन्म लेता है तो उस परिवार के सभी सदस्य उसके रक्त मूलक नातेदार बन जाते है। सबसे पहला वह बच्चा अपने माता-पिता का सन्तान बनता है। फिर परिवार मे भाई-बहन, पोता-पोती इत्यादि रक्त मूलक नातेदार बनते है।